यीशु का शुभ-संदेश

इवैंजलिस्टिक क्रम
पायनियर इवैंजलिस्टिक क्रम

"यीशु का शुभ-सन्देश" पुस्तक को कैसे प्रयोग करें

1. प्रत्येक सभा को एक संक्षिप्त प्रार्थना के साथ आरम्भ करें– प्रभु से यह विनती करते हुए कि कहानियों के लिए वह समझ प्रदान करे।

2. सभा में भाग लेने वालों के बीच कहानियों को पढ़ें अथवा यदि इसकी प्रतियां उपलब्ध हों तो 'इंडायरेक्ट मेथड' का उपयोग कर एक साथ मिलकर उसे पढ़ें।

3. कहानी के अंत में अगुवे को मौखिक प्रश्न पूछने चाहिए। इन प्रश्नों का उद्देश्य कहानी के प्रति समझ का मूल्यांकन करना है, न कि समय को खींचना अथवा वाद-विवाद करना है।

4. आत्मिक सच्चाइयों को पढ़ें। 'ग्रुप' के सदस्यों को स्वतंत्रता दें कि वे प्रत्येक आत्मिक सच्चाई पर खुलकर बहस कर सकें। सावधान रहें कि वे कभी भी किसी के साथ बहस अथवा वाद-विवाद न करें। इस बिंदु पर सदस्यों के लिए यह जरूरी नहीं कि वे आत्मिक सच्चाइयों पर सहमत हों अथवा उन्हें स्वीकार करें। महत्त्वपूर्ण केवल इताना है कि वे उस सत्य को समझ सकें जो परमेश्वर के वचन में प्रकट किया गया है।

5. आत्मिक सच्चाइयों के पश्चात् समय निकालें कि प्रत्येक व्यक्ति 'ग्रुप' के साथ अपनी आवश्यकताएं तथा प्रार्थना-निवेदन बांट सके।

6. 'ग्रुप' के प्रत्येक सदस्य के लिए अथवा उसकी आवश्यकता के लिए विशेष प्रार्थना करें। जैसे ही 'ग्रुप' आगे बढ़ता है और लोग प्रभु को ग्रहण करते हैं, तो होने दें कि सदस्यगण मध्यस्थता की प्रार्थना में प्रत्येक के लिए प्रार्थना करें।

"यीशु का जन्म"–पाठ 1
मत्ती 1-2

"इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ियाँ हुईं, और दाऊद के समय से बाबुल निर्वासन तक चौदह पीढ़ियाँ हुईं।" मत्ती 1:17

एक यहूदी स्त्री, मरियम, बिना यौन-संबंध के गर्भवती हुई, क्योंकि वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती हुई। उसके मंगेतर ने धर्मी होने के कारण नहीं चाहा कि समाज में मरियम को नीचा देखना पड़े, इसलिए उसने चुपचाप से निर्णय लिया कि वह अपनी मंगनी तोड़ देगा। लेकिन उस रात जब वह यह निर्णय ले रहा था कि प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई दिया और बोला, "हे यूसुफ, दाऊद के पुत्र, तू मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम 'यीशु' रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।" क्योंकि मरियम वही स्त्री थी जिसके विषय में यशायाह भविष्यद्वकता ने पुराने नियम में पहले ही से कहा था, "देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम "इम्मानुएल" रखेंगे, जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ।"

युसुफ सपने से जाग उठा, और उसने स्वर्गदूत की आज्ञा मानकर उसने मरियम से विवाह कर लिया। लेकिन जब तक बालक का जन्म नहीं हुआ, तब तक उन्होंने आपस में यौन-संबंध स्थापित नहीं किए, और जैसा स्वर्गदूत ने कहा था उसके अनुसार, यूसुफ ने बालक का नाम यीशु रखा। और यीशु का जन्म बैतलहम नगर में हो गया। बैतलहम इस्राएल देश के यहूदिया प्रान्त का एक नगर था, और यहूदिया के राजा का नाम हेरोदेस था। तब पूर्व से कुछ ज्ञानी एक तारे का पीछा करते हुए यहूदिया पहुंचे। ज्ञानियों के अध्ययन अनुसार, यह तारा इस बात का संकेत था कि यहूदिया में किसी राजा का जन्म होना था। लेकिन ज्ञानियों को निश्चित रूप से यह नहीं मालूम था कि राजा का जन्म ठीक किस स्थान पर हुआ था। इसीलिए वह सबसे पहले हेरोदस के महल में पहुंचे, जो यहूदिया प्रान्त का राजा था, और पूछने लगे, "यहूदियों के नये राजा का जन्म कहां हुआ है।"

हेरोदेस उनकी बात सुनकर बहुत क्रोधित हुआ और तब उसने धार्मिक सलाहकारों और याजकों की एक गुप्त सभा बुलाई। याजकों ने राजा को बताया कि धर्मशास्त्र के अनुसार प्रतिज्ञा किए गए बालक का जन्म बैतलहम नगर में होना चाहिए। तब हेरोदेस ज्ञानियों के पास गया और उनसे पूछा कि सबसे पहले तारा उन्होंने कब देखा। ऐसा उसने इसलिए पूछा था ताकि वह बालक की जन्म-तिथि का पता लगा सके तथा उसे बालक की उम्र का पता चल जाए।

हेरोदेस ने ज्ञानियों को बताया कि किस नगर में बालक का जन्म होना था और यह भी कहा, "जाओ और ध्यान से उस बालक को खोजो, और जब वह तुम्हें मिल जाए तो वापस आकर मुझे भी बताओ ताकि मैं भी जाकर उसकी आराधना कर सकूं।"

तब वे महल छोड़कर तारे का पीछा करते हुए बैतलहम पहुंचे, और तारा ठीक उस स्थान पर जा ठहरा जिस घर में बालक का जन्म हुआ था। उन्होंने घर में प्रवेश किया और जैसे ही उन्होंने बालक को उसकी मां, मरियम, के साथ देखा। उन्होंने झुककर उसकी आराधना की और

कीमती उपहार–सोना, मुर्र और गन्धरस की भेंट चढाईं और वे सब ज्ञानी उस स्थान से अपने घरों को वापस लौट पड़े। लेकिन इससे पहले कि वह वहां से निकल जाते, उन्होंने एक स्वप्न देखा, जिसमें उन्हें सावधान किया गया कि वे हेरोदेस के पास वापस न जाएं और न ही उसे यह बताएं कि बालक कहां उत्पन्न हुआ है। तब वे दूसरे रास्ते से अपने घर लौट गए।

उनके चले जाने के बाद यूसुफ ने एक और स्वप्न देखा। स्वप्न में परमेश्वर ने उसे सावधान किया कि राजा हेरोदेस इस बालक के पीछे पड़ेगा, इसलिए वे मिस्र भाग जाएं, और उसी रात वह अपने परिवार को लेकर वहां से मिस्र को भाग गया और हेरोदेस के मरने तक वह वहीं रहा। ये बात उस भविष्यवाणी का पूरा होना था जो होशे भविष्यवक्ता द्वारा कही गई थी, कि "मैं अपने पुत्र को मिस्र से बुलाऊंगा।"

जब हेरोदेस को पता चला कि ज्ञानियों ने उसे धोखा दिया है तो वह बहुत क्रोधित हुआ और तब उसने घोषणा की कि जितने भी दो-दो साल के लड़के हैं उनको मार दिया जाए, और बैतलहम और उसके आस-पास के नगरों में इन छोटे बच्चों की हत्या का भयानक दृश्य था। लेकिन यिर्मयाह भविष्यवकता ने पहले ही इस घटना के विषय में चर्चा की थी।

जब हेरोदेस मर गया तो स्वप्न में स्वर्गदूत ने यूसुफ को इस्राएल वापस लौट जाने को कहा। लेकिन यूसुफ थोड़ा घबराया, क्योंकि यहूदिया में हेरोदेस का पुत्र सिंहासन पर था। तब वह अपने परिवर को लेकर गलील के पड़ोसी प्रान्त के नगर नासरत को चला गया। यीशु ने अपना बचपन इसी नगर में बिताया। यह बात भी भविष्यवाणी का पूरा होना था, जिसमें कहा गया था कि "वह नासरी कहलाएगा।"

मौखिक प्रश्न

1. मरियम कौन थी?
2. स्वर्गदूत किसको दिखाई दिया और बोला कि बच्चे का क्या नाम रखा जाएगा?
3. क्यों ज्ञानी लोग पूर्व से यहूदिया आये थे?
4. क्यों हेरोदेस यीशु को ढूढ़ना चाहता था?
5. ज्ञानियों को कैसे मालूम हुआ कि उन्हें अपने-अपने घर दूसरे रास्ते से जाना चाहिए, हेरोदेस के पास नहीं।
6. हेरोदेस ने प्रतिज्ञा किये यहूदियों के राजा को किस प्रकार मारने की कोशिश की?
7. यूसुफ को कैसे मालूम हुआ कि उसे देश छोड़कर मिस्र भाग जाना चाहिए?
8. यूसुफ को कैसे मालूम हुआ कि अब वह वापस सुरक्षित लौट सकता है।
9. यूसुफ क्यों यहूदिया न जाकर अपने परिवार को लेकर गलील के पड़ोसी प्रान्त के नगर नासरत चला गया।
10. जिस नगर में यीशु ने अपना बचपन बिताया उसका क्या नाम है?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 1

मत्ती 1-2

1. परमेश्वर विश्वासयोग्य है और अपनी प्रतिज्ञाओं को हमेशा पूरा करता है। प्रथम पुरुष और स्त्री की रचना के समय से ही परमेश्वर ने संसार में उद्धारकर्ता को भेजने की प्रतिज्ञा की थी। कई सालों तक परमेश्वर इस प्रतिज्ञा को लोगों के साथ दोहराता रहा कि किस प्रकार उद्धारकर्ता का आना होगा। जेसे पवित्रशास्त्र में पहले ही से बताया गया था, ठीक उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह का आना इस जगत में हुआ। आइये, कहानी में हम कम से कम एक भविष्यवाणी को याद रखें जो यीशु के जन्म के द्वारा पूरी हुई।

   *परमेश्वर आज भी हमारे साथ अपनी की गई प्रतिज्ञाओं में विश्वासयोग्य है। बाइबल में, परमेश्वर ने हमारे लिए बहुत-सी महत्वपूर्ण प्रतिज्ञाएं की हैं जिनमें पता चलता है कि परमेश्वर की योजना हमारे बारे में क्या है। परमेश्वर उन सभी प्रतिज्ञाओं और भविष्यवाणिओं को पूरा करेगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम पवित्रशास्त्र को पढ़ें और खोजें कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं हमारे जीवन के लिए क्या हैं।

2. बाइबल परमेश्वर का वचन है, और जो कुछ इसमें है वह सत्य है। परमेश्वर हजारों साल पहले ही से अपने नाबियों द्वारा प्रभु यीशु के जन्म और जीवन के बारे में ठीक-ठीक बताता रहा। सब बातें ठीक वैसे ही पूरी हुईं, जैसी कि भविष्यवाणी की गई थी।

3. परमेश्वर सब वस्तुओं पर नियंत्रण रखता है। परमेश्वर आलौकिक और आश्चर्यजनक कार्य कर सकता है। बहुत-सी अद्‌भुत और आश्चर्यजनक घटनाएं इस कहानी में घटित हुई हैं। उनमें से कोई एक घटना क्या है?

4. परमेश्वर मनुष्य के साथ बातचीत कर सकता है और करता है। कुछ लोग विश्वास करते हैं कि पमरेश्वर ने संसार की सृष्टि तो की है लेकिन वह जो कुछ इस संसार में होता है उसकी चिन्ता नहीं करता। इस कहानी में परमेश्वर ने किस प्रकार मनुष्य से बातचीत की। परमेश्वर आज भी हमसे बातचीत करता है। हम इस अध्ययन द्वारा सीखेंगे कि हम कैसे परमेश्वर के साथ वास्तविक संबंध रख सकते हैं।

5. परमेश्वर हर वस्तु को जो होने वाली है जानता है। लेकिन कई बार वह अपने ईश्वरीय ज्ञान में उन खतरनाक चीज़ों को भी होने देता है। हेरोदेस प्रतिज्ञात राजा को मार देना चाहता था, क्योंकि उसे यीशु से डर था। परमेश्वर हेरोदेस के हृदय के बुरे विचार को जानता था। वह जानता था कि हेरोदेस सैकड़ों मासूम बच्चों की हत्या करेगा। हेरोदेस के हृदय के विरोध और विद्रोह के कारण एक भयानक घटना घटी। आज भी कई बार जब हम परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते और उसका विरोध करते हैं, तो बहुत-सी भयानक चीजें हमारे जीवन में घटती हैं। क्या आप कोई ऐसी आधुनिक उदाहण जानते हैं जिसमें किसी एक व्यक्ति की बुराई के कारण दूसरे को चोट पहुंची हो?

6. मनुष्य कभी भी परमेश्वर का सामना करके जीत नहीं सकता। हेरोदेस प्रतिज्ञा किए हुए बालक को मारने में असमर्थ रहा। केवल वह यह कर सका कि बहुत-से परिवारों में डर पैदा कर

दिया। आज भी कई बार, जब हम परमेश्वर की इच्छा और नियम के विरुद्ध जाने की कोशिश करते हैं, तो हम हमेशा ही भयानक स्थितियों में पड़ते हैं। शायद अपने को नही, लेकिन उनको जरूर चोट पहुंचाते हैं जो हमारे चारों ओर होते हैं। क्या आप किसी ऐसी घटना के बारे में सोच सकते हैं? जब आपने कुछ बुरा किया, जिसके द्वारा अपके जीवन में दुखद घटना घटित हुई। क्या आप ऐसे समय को याद कर सकते हैं, जब किसी अन्य व्यक्ति की बुराई के कारण आपको चोट पहुंची?

7. याजक और धार्मिक सलाहकार पवित्रशास्त्र के द्वारा प्रतिज्ञा किए गए राजा के विषय में जानते थे। किन्तु तब भी वे यीशु से मिलने नहीं आए। क्या धर्मी होने के लिए बाइबल को अधिक जानना और यीशु के बारे में अधिक किसी को जानना जरूरी है चाहे वह कभी भी यीशु को निजी रूप से अपने हृदय में न जानता हो?

8. यीशु "परमेश्वर हमारे साथ" अथवा "इम्मानुएल" हैं जो स्वर्गदूतों द्वारा कहे गये थे तथा पवित्रशास्त्र में यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा लिखे गए हैं। बहुत से लोग कहते हैं यीशु एक नबी था। "जबकि दूसरे कहते हैं कि वह एक स्वर्गदूत या एक अच्छा व्यक्ति था। परन्तु बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर हमारे साथ था।

आगे छः हफ्तों में हम खोज करेंगे कि वास्तव में यीशु मसीह कौन है, और उसका शुभ-संदेश जो वह पृथ्वी पर लाया क्या था।

"यीशु का बपतिस्मा" –पाठ 2
मती 3-4

"पश्चात्ताप करो क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है।" मत्ती 3:2

पुनर्विचार

1. यीशु की माता का नाम ..... था।
2. यीशु के जन्म का एक आश्चर्यकर्म यह था कि वह ..... से उत्पन्न हुआ था।
3. पुराने नियम में बहुत-सी बातें यीशु के जन्म के विषय में कही गई थीं; उनमें से एक यह थी कि उसका नाम इम्मानुएल होगा, जिसका अर्थ है परमेश्वर .....।
4. हेरोदेस यहूदिया का ..... था, जिसने यीशु को मारने की कोशिश की थी। उसने उन सब बच्चों को जो दो साल से छोटे थे, जो बैतलहम और उसके चारों ओर रहते थे, ... दिया था।
5. जो ज्ञानी लोग यीशु को ढूँढ़ने निकले वे एक ..... का पीछा कर रहे थे। वे वापस अपने घर दूसरे रास्ते से गए, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें एक ..... के द्वारा सावधान किया था कि हेरोदेस यीशु को ..... चाहता है।
6. यूसुफ परिवार सहित रात में ही मिस्र को भाग गया था। क्योंकि परमेश्वर ने उसे ..... में दिखाया कि हेरोदेस ..... के पीछे पड़ा हुआ है।
7. यूसुफ जानता था कि इस्राएल वापस जाने के लिए ..... से होकर जाना सुरक्षित रहेगा। लेकिन वह वापस बैतहम नहीं गया। लेकिन वह अपने परिवार को ..... नगर ले गया।
8. जैसा परमेश्वर पूरे इतिहास भर करता आया है, आज भी परमेश्वर अपनी .... को पूरा करता है।
9. परमेश्वर जानता है कि हमारे ..... में क्या है। यहां तक कि जहां बहुत अधर्म है, उसे भी वह जानता है।
10. यह संभव है कि बहुत अधिक धर्मी होने के लिए बाइबल और यीशु के बारे में अधिक जाना जाए, चाहे कोई कभी भी ..... को निजी रूप से अपने ..... मे न जानता हो।

ये शब्द यहूदा के जंगल में रहने वाले मनुष्य ने कहे थे। यह मनुष्य ऊंट के बालों का तथा चमड़े का वस्त्र पहनता था। वह जंगली शहद व टिड्डियां खाता था। उसका नाम यूहन्ना बपतिसमा देने वाला था। यरदन नदी के आसपास के इलाकों में रहने वाले बहुत से लोग जंगल में उसके वचनों को सुनने जाया करते थे। उसके सुसमाचार को सुनने के बाद उन्होंने यरदन नदी में अपने पापों के पश्चात्ताप के बाद बपतिस्मा लिया। बहुत से धार्मिक नेता, जैसे सदूकी और फरीसी भी, यह सब जो हो रहा था देखने गए। जब यूहन्ना ने उन्हें देखा तो उसने उन्हें 'सांप के बच्चों' कहकर पुकारा और आगे उसने कहा कि वे परमेश्वर से नहीं डरते, क्योंकि

वे अपने आपको धार्मिक समझते थे जो उन्हें विरासत में मिली और इसलिए वे अपने पापों की क्षमा मांगने की आवश्यकता नहीं समझते थे।

जब यूहन्ना वचन दे रहा था, तब यीशु उसके पास आया और चाहा कि यूहन्ना उसे बपतिस्मा दे। यीशु के सामने यूहन्ना स्वयं को अयोग्य मानता था। इसलिए पहले तो वह हिचकिचाया, परन्तु यीशु के जोर डालने पर दोनों यरदन नदी के पानी में उतर गए और यीशु ने बपतिस्मा लिया। जब यीशु पानी से बाहर आया तब पवित्र आत्मा कबूतर की नाई स्वर्ग से उसपर उतरा। साथ ही स्वर्ग से बहुत तेज़ आवाज़ आई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।"

उसके बाद पवित्र आत्मा उन्हें जंगल में ले गया ताकि शैतान के द्वारा उसकी परीक्षा हो। तब यीशु चालीस दिन और रात निराहार रहा और उसके बाद वह काफी भूखा और प्यासा था और यह वही समय था, जब शैतान उनके पास आया और उसने उसकी परीक्षा की।

बाइबल के अनुसार यीशु की तीन बातों से परीक्षा हुई। पहली परीक्षा में शैतान ने कोशिश की कि यीशु पत्थरों को रोटियां बना दे, जिससे यह साबित हो जाएगा कि वह पमरेश्वर का पुत्र हैं यीशु ने परमेश्वर के वचन के अनलुसार इसका उत्तर दिया। दूसरी बार, शैतान यीशु को मन्दिर की छत पर ले गया और कहा कि वह अपने आपको नीचे गिरा दे, लेकिन यीशु ने फिर परमेश्वर के वचन के अनुसार उत्तर दिय। अन्त में शैतान यीशु को ऊंचे पर्वत पर ले गया और कहा कि मैं तुझे सब कुछ दे दूंगा अगर तू नीचे गिरकर मुझे प्रणाम और दंडवत करे। यीशु नेउसे जवाब दिया कि तुझे परमेश्वर की आराधना और सेवा करनी चाहिए। यह सुनते ही शैतान यीशु को छोड़कर चला गया और स्वर्गदूत उसकी सेवा-टहल करने लगे।

जंगल से वापस आने के बाद यीशु को पता चला कि यूहन्ना को जेल में डाल दिया गया है। तब यीशु अपने बचपन के शहर नासरत को छोड़ कफरनहूम चले गए। जो यहूदा के उत्तम में गलील का एक इलाका है। तब वह बात पूरी हुई जो यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा कही गई थी, "जबलून, नप्ताली के देश समुद्र के किनारे, यरदन के उस पार अन्य जातियों का गलील जो लोग अंधेरे में बैठे थे, उन्होंने महान ज्योति देखी, और जो मृत्यु की घाटी में थे उन पर ज्योति चमकी।"

बाइबल के अनुसार इसके बाद यीशु ने लोगों में अपनी सेवा आरंभ कर दी और जिस संदेश का प्रचार उसने किया वह यह था "मन फिराओ पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"

मौखिक प्रश्न

1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का वर्णन करो?
2. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का क्या संदेश था?
3. अपने पापों को स्वीकार करने वालों के साथ यूहन्ना क्या करता था?
4. यूहन्ना बपतिसमा देने वाला यीशु को बपतिस्मा क्यों नहीं देना चाहता था?
5. यीशु को बपतिस्मा कैसे दिया गया?
7. यीशु जंगल में क्यों गया?
8. यीशु ने चालीस दिन और रात क्या किया?
9. शैतान की परीक्षाओं में एक परीक्षा क्या थी? बताएं?
10. यीशु की परीक्षा होने के बाद कौन लोग उसकी सेवा में उपस्थित हुए?
11. यूहन्ना को कैद में डालने की बात सुनकर यीशु कहां गए?
12. यीशु का संदेश क्या था? और ऐसे ही संदेश का प्रचार और किसने किया?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 2

मत्ती 3-4

1. **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला तथा यीशु दोनों के संदेश एक समान थे: "मन फिराओ और पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"**

- पश्चात्ताप का अर्थ अपने जीवन में पापों से मन फिराना और अपना जीवन पूर्णत: यीशु के हाथों में दे देना है।
- पाप परमेश्वर और उसके नियमों का उल्लंघन है।

क्या पश्चात्ताप करना मनुष्य के लिए बहुत कठिन बात है। इस शब्द से आप क्या समझते हैं?
अपने समूह में इस बात की चर्चा करें और हर कोई अपना विचार दे।

2. **धार्मिक नेता यही सोचते थे, कि उन्हें पापों को मानने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। क्योंकि वे धार्मिक हैं। वे सोचते थे कि वे भले मनुष्य हैं। यूहन्ना ने उन्हें सांप की संतान कहकर पुकारा है। क्या इस संसार में ऐसा कोई धार्मिक व्यक्ति है जिसे अपने पापों से पश्चात्ताप करने की आवश्यकता न हो?**

* **बाइबल रोमियों 3: 23 में कहती है "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"**

* **क्या इस दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसने पाप न किया हो? क्या इस संसार में ऐसा कोई व्यक्ति है जिसने कभी भी परमेश्वर के आत्मा और उसके व्यवहार के विरोध में पाप न किया हो। बाइबल कहती है, "नहीं" क्या आप बाइबल से सहमत हैं, कि हम सब के जीवन में पाप है। पुन: यह आवश्यक है, कि प्रत्येक व्यक्ति को अवसर मिले कि वह इस विषय पर परमेश्वर के वचन को चुनौती दे सके। अगुवा होने के नाते तर्क न करें, और न ही दूसरों को करने दें; परन्तु यह ठीक है कि लोग अपनी भावनाओं को प्रकट कर सकें।**

3. **यीशु का बपतिस्मा हुआ, लेकिन परमेश्वर होने के कारण उसने कभी पाप नहीं किया।**

   इसका अर्थ यह है कि बपतिस्मा कोई धार्मिक परम्परा नहीं है कि इसके द्वारा मनुष्य के जीवन से पाप खत्म हो जाएगा। यदि बपतिस्मा व्यक्ति के पाप को नष्ट करता है तो यीशु को कभी भी बतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती; क्योंकि वह तो स्वयं परमेश्वर था, और उसमें कोई पाप नहीं था।

4. जब यीशु पानी से बाहर आया तब पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में उसपर उतरा और स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी," कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।" यहां पर हम त्रिएकता के तीन व्यक्तियों को देखते हैं वे क्या हैं?

परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा

5. यीशु परीक्षा के लिए शैतान द्वारा जंगल में ले जाया गया। शैतान वास्तव में है। वह एक आत्मा है जो इस संसार में है। उसके साथ बहुत-सी आत्माएं हैं जो उसका अनुसरण करती हैं, जिन्हें दुष्टात्मा कहा जाता है, जो हमारे जीवनों में विनाश लाती हैं, तथा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कराती हैं। जिस तरह यीशु की परीक्षा हुई उसी तरह शैतान हमारी परीक्षा करता है। परन्तु बाइबल हमें सिखाती है कि प्रभु यीशु के विपरीत हमारी परीक्षा उन बुराइयों से होती हैं जो हमारे हृदय में होती हैं। जिससे परमेश्वर अप्रसन्न होता है।
6. यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की कि यीशु मसीह झील के किनारे रहेगा और उनके लिए, जो अंधकार में बैठे हैं और मृत्यु की घाटी में रहते हैं, वह ज्योति बनेगा।

"यीशु के आश्चर्यकर्म"–पाठ 3

मत्ती 4–9

"मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा।" – मत्ती 4:19

पुनर्विचार

1. यीशु के आगमन के विषय में यूसुफ को किसने बताया और किसने उसे बताया कि उसका नाम "इम्मानुएल" या "परमेश्वर हमारे साथ" होगा? यह हमें बताता है कि यीशु .... हमारे साथ है।
2. बालक यीशु को कौन मरवाना चाहता था और क्यों? यीशु बच निकला, क्योंकि .... चले गए।
3. यीशु को बपतिस्मा किसने दिया? यीशु मसीह का बपतिस्मा हमें इस सच्चाई को बताता है कि बतिस्मा का कार्य हमारे जीवन के ..... से शुद्ध करना नहीं है।
4. जब यीशु पानी से निकला तो कबूतर की नाई स्वर्ग से कुछ उतरा और एक आवाज़ भी स्वर्ग से सुनाई दी। यह कबूतर क्या था, और आवाज किसकी थी?
5. फरीसियों ने सोचा कि उन्हें अपने पापों से पश्चात्ताप की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे धर्मी हैं। क्या संभव है कि केवल धर्मी बनने से किसी के पाप मिटते हैं?
6. 'पश्चात्ताप' शब्द का क्या अर्थ है?
7. पाप क्या है?
8. निर्जन स्थान में यीशु की परीक्षा किसने की?
9. यीशु निर्जन स्थान छोड़कर कहां गया?

गलील की झील के किनारे चलते हुए यीशु दो मछुओं से मिला। उसने उन्हें बुलाया और कहा, "मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊंगा।" वे तुरंत जालों को छोड़कर उसके पीछे चल पड़े। उस दिन यीशु ने अपने पहले चार चेलों, अर्थात् पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना को बुलाया। वे सभी मछुए थे, तब यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनके आराधनालयों में उपदेश देता, राज्य में सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और हर प्रकार की दुर्बलता को दूर करता फिरा। जहां कहीं भी वह जाता, एक बड़ी भीड़ भी उसके पीछे हो लेती थी।

एक कोढ़ी यीशु के पास आया और उसे दंडवत करके कहने लगा, "हे प्रभु, तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।" यीशु ने कहा "मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा।" और वह तुरंत कोढ़ से शुद्ध हो गया।

एक रोमी सूबेदार यीशु के पास आया, और उसने यीशु से विनती की कि वह उसके सेवक को चंगा करे जो लकवे का मारा अत्यन्त पीड़ा में पड़ा हुआ था। उसने विश्वास किया कि यीशु की सामर्थ उसे चंगा कर सकती है। यीशु ने उससे कहा कि, सारे राज्य के लोग स्वर्ग के राज्य में भोजन करने बैठेंगे, और उसका सेवक उसी क्षण चंगा हो गया।

इसके बाद झील के उस पार दो मनुष्य दुष्टात्मा से ग्रस्त थे। वे कब्रों में रहते थे। वे इतने शक्तिशाली और उग्र थे कि कोई भी उन्हें पकड़ नहीं सकता था। जब उन्होंने यीशु को देखा,

तो चिल्लाकर कहा, "हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझसे क्या काम? क्या तू समय से पहले हमें दुख देने आया है?"

उनसे कुछ ही दूर बहुत से सुअरों का एक झुंड चर रहा था। दुष्टात्माओं ने उनसे विनती की, "यदि तू हमें निकालना चाहता है तो हमें सूअरों के झुंड में भेज दे।" उसने उनसे कहा, "जाओ!" वे उन मनुष्यों में से तुरंत निकलकर सुअरों में समा गईं।

पूरा झुंड वेगपूर्वक ढालू किनारे से समुद्र में जा पड़ा और डूब मरा। और चरवाहे भागकर नगर में गए और ये सब बातें और दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्यों पर जो कुछ बीता था उनका सारा हाल कह सुनाया। सारे नगर के लोग निकलकर यीशु से मिलने आए और उसे देखकर विनती की, हमारे प्रदेश से बाहर चला जा।

वह नाव पर बैठकर पार गया और अपने नगर में आया। वहां वह मत्ती नाम के एक मनुष्य से मिला जो चुंगी लेता था। यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे आ।" वह उठा और उसके पीछे चल दिया। फिर उस रात यीशु और उसके चेले चुंगी लेने वालों और पापी मनुष्यों के साथ भोजन करने लगे। यह देखकर फरीसियों ने उसके चेलों से कहा, "तुम्हारा गुरु चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?"

परंतु उसने यह सुनकर उनसे कहा, "भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परंतु बीमारों को होती है।" परन्तु जाओ और इसका अर्थ सीखो: "मैं बलिदान नहीं, पर दया चाहता हूं।" मैं धर्मियों को नहीं, परंतु पापियों को बुलाने आया हूं कि वे पश्चात्ताप करें।

मौखिक प्रश्न

1. यीशु के प्रथम चेलों का व्यवसाय क्या था?
2. जब यीशु ने उन्हें अपने पीछे चलने को कहा, तब उन्होंने क्या किया?
3. यीशु गलील की सभी जगहों पर गया और भीड़ उसके पीछे चल रही थी। ऐसा वह क्या कर रहा था कि सभी का ध्यान उस पर था?
4. मत्ती की पुस्तक में पहली चंगाई कौन-सी लिखी गई?
5. रोमी सूबेदार के सेवक की क्या समस्या थी?
6. दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य कहां रहते थे? वे किस प्रकार के मनुष्य थे?
7. यीशु को देखकर दुष्टात्माओं का क्या हुआ?
9. सुअरों को क्या हुआ?
10. सुअर के रखवालों की क्या प्रतिक्रिया थी?
11. मत्ती किस प्रकार का मनुष्य था?
12. यीशु ने किन लोगों के साथ भोजन किया?
13. यह देखकर फरीसियों ने क्या कहा?
14. यीशु ने फरीसियों को क्या उत्तर दिया?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 3
मत्ती 4–9

1. यीशु लोगों के बीच कोई भेदभाव नहीं करता।
- यीशु के प्रथम चेले मछुए थे, जो औपचारिक शिक्षा के बगैर, साधारण मनुष्य थे।
- कोढ़ी मनुष्य को नगर से बाहर निकाल दिया गया था, क्योंकि वह अपने रोग से कुरूप हो गया था और लोग उससे घृणा करते थे।
- रोमी सूबेदार का सेवक एक अपाहिज मनुष्य था जिसके पास न तो धन था और न ही समाज में कोई मान था।
- मत्ती एक चुंगी लेने वाला था जो संभवत: धनी, परंतु भ्रष्ट था।
- नगरवासियों द्वारा दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य इतने तिरस्कृत थे कि नगरवासियों को उनकी चंगाई से अधिक अपने सुअरों की तंदुरुस्ती की चिंता थी। वास्तव में उन्हें कब्रों के बीच रहना पड़ता था।

* **परंतु यीशु के लिए ये सभी व्यक्ति महत्वपूर्ण और मूल्यवान थे। परमेश्वर की दृष्टि में आप योग्य एवं मूल्यवान हैं। परमेश्वर के सामने आपके भूतकाल, धन, रूप और समाज में आपके स्थान का कोई अर्थ नहीं है।**

2. यीशु के पास हमारे रोगों को चंगा करने की सामर्थ है। इस कहानी में लोगों को चंगा करने के कौन-कौन से उदाहरण दिए गए हैं?

3. यीशु को दुष्टात्मा के ऊपर अधिकार है। कई बार लोग दुष्टात्माओं के प्रभाव में आ जाते है, जबकि वे अच्छे कार्य कर रहे होते हैं। लेकिर इससे पहले कि वे जानें कि उनके साथ क्या घट रहा है, दुष्टात्माएं उनके जीवन पर अपना प्रभाव डाल चुकी होती हैं। ये दुष्टात्माएं उन्हें चलाती और सताती है और उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ती। उनके पास कोई सामर्थ नहीं है कि वे इस दुष्टत्माओ से अपने जीवन में छुटकारा पा सकें। **यीशु को हर दुष्टात्मा जो इस संसार में है, उन पर अधिकार और सामर्थ प्राप्त है। हम केवल यीशु के द्वारा ही इन बुरी आत्माओं से स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं।**

4. यीशु पापी मनुष्य से प्रेम करता है। वह सभी पापियों को ग्रहण करता है। यीशु मनुष्य को दंड देना नहीं चाहता, परंतु उसकी इच्छा है कि वे पश्चात्ताप करें और क्षमा पाएं।

5. धार्मिक अगुवे, अर्थात फरीसियों ने अपने पापों से पश्चात्ताप नहीं किया, क्योंक उन्होंने सोचा कि वे उन पापियों से अच्छे हैं जो यीशु के साथ भोजन कर रहे थे। अच्छा क्या है। एक बड़ा पापी जिसे पापों की क्षमा मिली, या थोड़े पापों के साथ ऐसा मनुष्य जिसने पश्चात्ताप नहीं किया?

- **यह अधिक अच्छा है कि एक बड़ा पापी होते हुए उसको उसके पापों से क्षमा मिली हो**

  हम जैसे भी हों, यीशु हमें ग्रहण करता और हमसे प्रेम करता है। यह उसके लिए अर्थ नहीं रखता कि हम कितने भयानक पापी हैं, गरीब हैं या कम पढ़े-लिखे हैं, या हमारी बहुत समस्याएं हैं, या हम बीमार हैं। उसकी दृष्टि में हम सभी बराबर हैं। मुख्य बात यह है कि हम पश्चात्ताप करके उसके पीछे हो लें।

"यीशु की शिक्षाएं"–पाठ 4
मत्ती 10–16

"मैं दया चाहता हूं, बलिदान नहीं।" मत्ती 12:7

पुनर्विचार

1. यीशु का जन्म एक यहूदी स्त्री द्वारा हुआ जिसका नाम ..... था।
2. पूर्व दिशा के ज्योतिषियों ने यीशु को ढूंढ़ लिया क्योंकि वे एक ..... का पीछा कर रहे थे।
3. ज्योतिषी वापस लौटकर हेरोदेस के पास नहीं गए, क्योंकि उन्हें परमेश्वर से ..... में यह चेतावनी मिली कि वे दूसरे मार्ग से अपने देश लौट जाए।
4. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में रहकर प्रचार करने लगा और जो अपने पापों का अंगीकार करते थे, उसने उन्हें ..... दिया।
5. 'पश्चात्ताप' का अर्थ क्या होता है?
6. जब यीशु का बपतिस्मा हुआ, तब ..... कबूतर की नाई पृथ्वी पर उतरा और एक आकाशवाणी सुनाई दी। यह परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है। परमेश्वर ....., परमेश्वर ..... और परमेश्वर .....। इसे हम त्रिएकता कहते हैं।
7. यीशु की परीक्षा ..... के द्वारा निर्जन स्थान में हुई।
8. यीशु के प्रथम चेले व्यवसाय से ..... थे।
9. दो मनुष्य, जो दुष्टआत्मा-ग्रस्त थे, यीशु को मिले। यीशु ने कैसे उनकी सहायता की? यीशु के इस कार्य पर नगरवासियों की क्या प्रतिक्रिया थी?
10. यीशु ने किन लोगों के साथ भोजन किया था जिसकी आलोचना फरीसी कर रहे थे?
11. क्या वह मनुष्य अच्छा है जिसने अधिक पाप किए और पश्चात्ताप किया, या फिर वह मनुष्य जिसने कम पाप किए और पश्चात्ताप नहीं किया?

यीशु मसीह ने बारह मनुष्यों को अपना चेला बनने के लिए चुन लिया कि वे उसके साथ रहें और वह उन्हें शिक्षित करे। उसने इन बारहों को दुष्टात्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारी तथा दुर्बलता को चंगा करने की सामर्थ दी। उसने उनसे कहा कि तुमने मुफ़्त में पाया है, मुफ़्त में दो। जिन्हें उसने भेजा था उनमें यहूदा इस्करियोती भी था।

यीशु ने उन्हें इस्राएल के सभी यहूदियों के पास भेजा कि वे पश्चात्ताप करें और यीशु मसीह पर विश्वास करें। इन बारहों को यीशु ने यह निर्देश देकर भेजा, "प्रत्येक जो मनुष्यों के सम्मुख मुझे स्वीकार करेगा, मैं भी उसे अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है स्वीकार करूंगा। पर जो मनुष्यों के सम्मुख मुझे अस्वीकार करेगा, मैं भी उसे अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है, अस्वीकार करूंगा।"

तब यीशु स्वयं गलील में शिक्षा देने, प्रचार करने और हर प्रकार की बीमारियों को ठीक करने निकल पड़ा। परंतु नगरवासियों ने, जिनके साथ उसने अपना अधिक समय व्यतीत किया, उसका संदेश स्वीकार नहीं किया। कफरनहूम नगर ने, जहां से उसने सेवकाई आरंभ की, उसे स्वीकार नहीं किया। इन सब बातों को देखकर, यीशु ने अपने पिता से कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी

के प्रभु, में तेरी स्तुति करता हूं कि तूने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छिपाकर रखी और बच्चों पर प्रकट की हैं। हां, पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। मेरे पिता के द्वारा मुझे सब कुछ सौंपा गया हैं, पिता के अतिरिक्त पुत्र को कोई नहीं जानता, न पुत्र के अतिरिक्त पिता को कोई जानता है, या वही जिसपर पुत्र उसे प्रकट करना चाहता है। हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।"

तब यीशु सब्त के दिन खेतों मे से होकर निकला; उसके चेलों को भूख लगी और वे बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे। यह देखकर फरीसी, जो धार्मिक अगुवे थे, चेलों की भर्त्सना करने लगे, क्योंकि व्यवस्था में सब्त के दिन काम करना उचित नहीं था। यीशु ने यह कहते हुए कहा कि वे अभी तक परमेश्वर के नियम को नहीं समझते, क्योंकि लिखा है, "मैं दया चाहता हूं बलिदान नहीं।"

खेत से निकलकर यीशु और उसके चेले आराधनालय गए और वहां उन्हें एक सूखे हाथ वाला मनुष्य मिला। यीशु ने उस मनुष्य से हाथ बढ़ाने को कहा और सब्त के दिन आराधनालय में उसे चंगा किया। तब फरीसी बाहर निकले और उसके विरोध में सम्मति की कि उसे किस प्रकार नष्ट करें। परंतु यीशु यह जानकर वहां से निकल गया। बहुत से लोग उसके पीछे चल पड़े, और उसने उन सबको चंगा किया और उन्हें चेतावनी दी कि वे उसे प्रकट न करें, और यीशु कुछ और दिन उस नगर में लोगों को शिक्षा देता रहा और उन्हें उनकी बीमारी से चंगा करता रहा। दो बार ऐसा हुआ कि लोग बहुत लम्बे समय तक बगैर कुछ खाए, जंगल में वचन सुनते रहे और दोनों बार यीशु ने सात से कम रोटी और कुछ मछलियों से लगभग चार हजार मनुष्यों को भोजन खिलाया।

जब वह गलील में ही था, उसने चेलों को बताया कि कुछ समय बाद वह यरूशलेम जाएगा और वहां भयानक घटनाएं घटेंगी; और उसने कहा कि वह शास्त्रियों द्वारा दुख उठाएगा और मार डाला जाएगा और तीन दिन के पश्चात् वह फिर जी उठेगा।

मौखिक प्रश्न

1. यीशु ने अपने चेलों को कौन-सा कार्य करने के लिए सौंपा?
2. यीशु ने उन लोगों के लिए क्या कहा, जो उसे मनुष्यों के सम्मुख स्वीकार करेंगे, और जो मनुष्यों के सम्मुख अस्वीकार करेंगे?
3. कफरनहूम के निवासी तथा गलील के उन नगरों में, जहां उसने अधिकांश आश्चर्यकर्म किए थे, यीशु के संदेश की क्या प्रतिक्रिया हुई?
4. बोझ से दबे और सब थके हुओं को यीशु ने अपने पास बुलाया। यीशु ने उन लोगों से क्या प्रतिज्ञा की?
5. यीशु और उसके चेले खेत में क्यों रुके?
6. बालें तोड़ने पर फरीसियों ने यीशु की आलोचना किस प्रकार की?
7. सूखे हाथ वाले मनुष्य को चंगा करने पर फरीसियों ने यीशु की आलोचना क्यों की?
8. यहूदी अगुवों की सम्मति करने का क्या उद्देश्य था?
9. यीशु ने अपने चेलों को बताया कि कुछ बातें उसके साथ घटने वाली हैं। उसकी क्या भविष्यवाणी थी?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 4

मत्ती 10–16

1. वे जो मनुष्यों के सम्मुख यीशु को स्वीकार करते हैं, उन्हें वह पिता के सम्मुख स्वीकार करेगा। परन्तु वे जो मनुष्य के सम्मुख उसे अस्वीकार करेंगे वह उनको अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है, अस्वीकार करेगा।

2. बहुत से लोग यीशु के पीछे केवल आश्चर्यकर्म देखने के लिए चलते थे। परंतु वे उसके साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहते थे, और न ही उसकी आज्ञा का पालन करना चाहते थे। वे अपने पापों से पश्चात्ताप नहीं करना चाहते थे। वे केवल परमेश्वर की दया का लाभ उठाना चाहते थे। आज भी कई लोग ऐसा ही करते हैं। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं?

3. यीशु मसीह के अतिरिक्त पिता को कोई नहीं जानता। जो कोई पिता परमेश्वर को जानना चाहता है, वह केवल यीशु मसीह के द्वारा ही जान सकता है। परमेश्वर और हमारे बीच यीशु मसीह के अतिरिक्त कोई और बिचवई नहीं हैं। परमेश्वर एक ही है, और उसके पास जाने का मार्ग भी एक ही है, और बाइबल हमें बताती है कि वह मार्ग यीशु मसीह है।

* **हो सकता है कि आपको यीशु मसीह के अतिरिक्त किसी अन्य मध्यस्थों के द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करना सिखाया गया हो। यह अन्य मध्यस्थ कौन हैं: क्या वे देवता, भविष्यद्वक्ता, या बीते समय के अच्छे लोग हैं? बाइबल बताती है कि वे अच्छे लोग तो हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर नहीं हैं। क्या आप बाइबल से सहमत है कि परमेश्वर और मनुष्यों के बीच केवल एक ही बिचवई है, अर्थात यीशु मसीह।**

4. **यीशु मसीह हमारे बोझ और चिंताओं को उठाना चाहता है। वह नम्र और मन में दीन है। वह हमारे बोझ से हमें छुटकारा देना चाहता है। यदि हम उसका जुआ उठा ले, तो हम मन में विश्राम पाएंगे, अर्थात हम उसे प्रभु मानकर अपने जीवन में स्वीकार करें।**

5. **यीशु मसीह को हमारे भौतिक आवश्यकताओं की चिंता है। शिष्य भूखे थे, और यीशु ने उन्हें भोजन प्रदान किया। यह जानते हुए कि यहूदियों का प्रकोप और उत्पीड़न उनपर भड़केगा। सृष्टि के सृजनहार परमेश्वर को प्रत्येक की आवश्यकताओं की चिंता है।**

"मैं दया चाहता हूं, बलिदान नहीं।" आप 'बलिदान' का क्या अर्थ समझते हैं? क्या आपके धार्मिक अगुवों ने भलाई प्राप्त करने के लिए या पापों की क्षमा के लिए आपको सिखाया कि परमेश्वर को बलिदान चढ़ाओ? क्या आपके लिए विश्वास करना कठिन है कि परमेश्वर आपसे बलिदान नहीं चाहता? यह दूसरी बार था कि यीशु मसीह ने फरीसियों को समझाया कि परमेश्वर मनुष्यों के बलिदानों से खुश नहीं होता परंतु धार्मिक लोगों के लिए यह बात स्वीकार करना कठिन है। सभी धर्म सिखाते हैं कि हमें परमेश्वर का प्रकोप हटाने व उसे खुश करने के लिए अवश्य कुछ करना चाहिए। अपनी मन्नत पूरी करने के लिए, पापों की क्षमा के लिए और परमेश्वर को भक्ति दिखाने के लिए कई

लोग कई प्रकार के कठिन कार्य करते हैं। परंतु ये सब परमेश्वर नहीं चाहता। यीशु यह जानता था कि उसे कई दुखों से गुजरना है, और फिर मरना है, और फिर तीन दिन बाद मरे हुओं में से जी उठेगा। यह परमेश्वर की योजना थी। उसने यह बात चेलों को भी समझाई, परंतु वे नहीं समझे कि वह क्यों मरकर फिर जी उठेगा।

* इस अध्ययन के पिछले तीन अध्यायों में, हम यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के महत्त्व को समझने की कोशिश करने जा रहे हैं। यह अतुलनीय घटना संसार के इतिहास को हमेशा के लिए बदल देगी। इस घटना में इतनी सामर्थ है कि वह पाप के दासत्व को तोड़कर हमारे जीवन को बदल दे।

'यीशु के साथ विश्वासघात'–पाठ 5

मत्ती 20-26

अब यीशु यरूशलेम जाते समय बारह चेलों को एकान्त में ले जाकर मार्ग में उनसे कहने लगा, "देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं। मनुष्य का पुत्र मुख्य याजकों और शास्त्रियों के हाथों पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मृत्यु-दंड के योग्य ठहराएंगे। वे उसे गैरयहूदियों के हाथों में सौंपेंगे कि वे सका उपहास करेंगे, उसे कोड़े मारें उसे क्रूस पर चढ़ाएं और तीसरे दिन वह पुनः जीवित हो जाएगा।" मत्ती 20 : 17-19

पुनर्विचार

1. यीशु एक कुंवारी स्त्री द्वारा उत्पन्न हुआ जिसका नाम ..... था।
2. उसके पिता ..... को परमेश्वर ने स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि वह मिस्र को भाग जाए क्योंकि राजा हेरोदेस बालक यीशु को ..... चाहता था।
3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में रहकर प्रचार करता रहा और जिन्होंने अपने पापों से . ..... उन्हें बपतिस्मा दिया।
4. यीशु मसीह ने कोई ..... नहीं किया, फिर भी उसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बपतिस्मा लिया।
5. "पश्चात्ताप" शब्द का क्या अर्थ है?.....
6. जब यीशु का बपतिस्मा हुआ, तब ..... कबूतर की नाई उतरा और परमेश्वर की आवाज़ यह कहते हुए सुनाई दी "यह मेरा ..... है जिससे मैं प्रसन्न हूं।"
7. निर्जन स्थान में यीशु ..... द्वारा परखा गया।
8. यीशु मसीह का सामना दो मनुष्यों से हुआ जो ..... से ग्रस्त थे। यीशु मसीह ने प्रदर्शित किया कि उसे दुष्टात्मा पर ..... है।
9. कौन अच्छा है, वह मनुष्य जिसने अधिक पाप किए और उनसे पश्चात्ताप किया, या वह मनुष्य जिसने कम पाप किए और कभी पश्चात्ताप नहीं किया?
10. यीशु ने कहा कि यदि हम मनुष्य के सम्मुख उसे स्वीकार करें, तो वह .....के सम्मुख जो स्वर्ग में है, हमें ..... करेगा।
11. कई गलीली, कफ़रनहूम निवासियों सहित परमेश्वर के वचन को ....., वे यीशु मसीह के पीछे केवल इसलिए चलते थे क्योंकि वह बहुत आश्चर्यकर्म करता था।
12. वे अपने पापों से पश्चात्ताप नहीं करना चाहते थे। यहां "पश्चाताप" शब्द का क्या अर्थ है?
13. यीशु मसीह ने कहा कि जो थके और बोझ से दबे हुए लोग हैं उन्हें वह ..... देगा, क्योंकि उसका जुआ ..... है।
14. फरीसी नहीं चाहते थे कि यीशु मसीह सूखे हाथ वाले मनुष्य को चंगा करे क्योंकि वह .. .. का दिन था, और यह व्यवस्था के नियम के विरुद्ध था कि कोई ..... के दिन काम करे।
15. फरीसी यीशु को ..... के लिए योजना बनाने लगे।

16. यीशु जानता था कि फरीसी उसे मारने की योजना बना रहे थे, लेकिन फिर भी वह दो .. .. ओर कुछ ..... से चार हजार से अधिक मनुष्यों को भोजन कराने सहित कई आश्चर्यकर्म करता रहा।

यीशु अपने चेलों के साथ गलील से यरूशलेम को गया। जब वह यरूशलेम पहँचने पर था, यीशु ने दो चेलों को पास के गांव में भेजा और कहा कि उन्हें वहां एक गदही के साथ उसका बच्चा बाँधा हुआ मिलेगा, जिसकी उसे आवश्यकता है। यीशु उस गदही के बच्चे पर बैठ गया और यरूशलेम में प्रवेश किया।

वह बड़ी भव्यता और विजयोल्लास के साथ यरूशलेम में प्रवेश हुआ। मार्ग के दोनों ओर भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ में से बहुतों ने अपने वस्त्र मार्ग में बिछाए और उसके सम्मान में दूसरों ने खजूर की डालियां काटकर मार्ग में बिछाईं। जो उसके आगे-पीछे चल रहे थे, पुकार-पुकारकर कह रहे थे, "दाऊद की संतान को होशन्ना। धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है! सर्वोच्च स्थान में होशन्ना!"

जब उसने नगर में प्रवेश किया तो सारे नगर में हलचल मच गई और सब कहने लगे, "यह कौन है?" और भीड़ के लोग कह रहे थे, "यह गलील के नासरत का नबी यीशु है।"

यीशु ने मंदिर में प्रवेश करके उन सबको जो मंदिर में लेन-देन कर रहे थे, निकाल दिया और सर्राफों की मेजें और दुकानों की चौकियां उलट दीं। उसने उनसे कहा, "लिखा है, 'मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा,' पर तुमने उसे डाकुओं की खोह बना दी है।" तब अंधे और लंगड़े उसके पास आए और उसने उन्हें चंगा किया।

कई बातों की शिक्षा देने के बाद यीशु ने मंदिर में कई चिह्न और आश्चर्यकर्म किए। तब मुख्य याजक और शास्त्री उसको मरवाने के लिए षड्यंत्र रचने लगे। वे विचार-विमर्श करने लगे कि उसे कैसे धोखे से मार डालें। वे फसह के पर्व के समय इस खोज में थे कि कैसे उसे पकड़ें और मार डालें। फिर उन्होंने फसह का पर्व निकल जाने तक इंतजार करना निश्चित किया।

तब बारहों में से एक, जिसका नाम यहूदा इस्करियोती था, मुख्य याजकों के पास गया और उसने कहा, "यदि मैं यीशु को तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे" उन्होंने उसे चांदी के तीस सिक्के तौल कर दे दिए। तबसे वह उसे पकड़वा देने का उपयुक्त अवसर ढूंढ़ने लगा।

जब फसह का पर्व आया, चेलों ने यीशु के निर्देश के अनुसार भोजन खाने की तैयारी की। फिर संध्या के समय यीशु चेलों के साथ भोजन करने बैठा तो उसने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुममें से एक मुझे पकड़वाएगा।" इसपर वे अत्यन्त व्यथित होकर एक-एक करके उससे पूछने लगे, कौन पकड़वाएगा। मनुष्य के पुत्र को तो, जैसा उसके विषय में लिखा गया है। जाना ही है, परंतु हाय उसपर जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाएगा। उस मनुष्य के लिए अच्छा होता यदि वह जन्म न लेता।" तब उसके पकड़वाने वाले अर्थात् यहूदा ने कहा, "रब्बी, क्या वह मैं हूं?" "तूने स्वयं ही कह दिया," यीशु ने उत्तर दिया।

जब वे भोजन कर रहे थे, यीशु ने रोटी ली और आशीष मांग कर तोड़ी और चेलों को देकर कहा, "लो, खाओ यह मेरी देह है।" फिर उसने प्याला लेकर धन्यवाद दिया और उन्हें देते हुए कहा, "तुम सब इसमें से पियो, क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुत लोगों के निर्मित्त पापों की क्षमा के लिए बहाया जाने को है।"

भोजन करने के पश्चात् उन्होंने भजन गाए। इसके बाद वे जैतून पर्वत पर चले गए। वहां यीशु

उन्हें वे बातें बताने लगा जो थोड़े ही समय बाद घटने वाली थीं।

तब यीशु गतसमनी नामक स्थान में आया, जहां वह पूरी रात प्रार्थना में उनके साथ बिताना चाहता था। उसने अपने साथ पतरस, याकूब और यूहन्ना को लिया और व्यथित तथा व्याकुल होने लगा। उसने उन्हें अपने साथ जागने को कहा, और वह स्वयं वहां से थोड़ी दूर जाकर एकान्त में अपने पिता से प्रार्थना करने लगा। उसने उन होने वाली बातों के लिए प्रार्थना की। उसने इस प्रकार प्रार्थना की:

"हे मेरे पिता, यदि संभव हो तो यह प्याला मुझसे टल जाए। फिर भी मेरी नहीं, पर तेरी इच्छा पूरी हो।"

ऐसा लिखा है कि यही प्रार्थना उसने तीन बार की। उसका मन बहुत उदास था, यहां तक कि वह मरने पर था। फिर भी चेले उसके साथ एक घड़ी भी न जाग सके। वे सब सो रहे थे। अंत में यीशु ने उन्हें जगाते हुए कहा, "उठो, चलें। देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है।"

मौखिक प्रश्न

1. यीशु ने किस जानवर पर बैठकर यरूशलेम में प्रवेश किया?
2. जब यीशु नगर में प्रवेश कर रहा था, तब लोगों ने क्या किया?
3. यहूदा ने यीशु को पकड़वाने के लिए क्या किया?
4. नगर में कौन-सा पर्व मनाया जा रहा था?
5. यीशु ने यहूदा को कैसे चिताया कि वही उसे पकड़वाएगा?
6. भोजन के समय यीशु ने दाखरस के विषय में क्या कहा?
7. यीशु के अनुसार, लहू का बहाया जाना किनके लिए आवश्यक था?
8. यीशु अपने चेलों के साथ रात्रि में प्रार्थना के लिए गतसमनी में गया। कितने चेले सारी रात जागते और उसके साथ प्रार्थना करते रहे?
9. जिस रात यीशु पकड़वाया जाने को था, उसने क्या प्रार्थना की?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 5

मत्ती 20-26

1. परमेश्वर प्रत्येक वस्तु पर नियंत्रण रखता है: फरीसी यीशु को किसी षड्यंत्र में फंसा कर पकड़ना चाहते थे। लेकिन परमेश्वर अपनी सिद्ध इच्छा को पूरा करने के लिए उनका इस्तेमाल कर रहा था। परमेश्वर की हमेशा से यह इच्छा थी कि यीशु लोगों के पापों के लिए सलीब पर मरे।
2. परमेश्वर हमेशा हमारे हृदय की बात जान लेता है जो शायद और नहीं जानते: प्रभु यीशु को पहले से ही मालूम था कि उसका चेला यहूदा उसे धोखा देगा।
3. यीशु हमसे प्रेम करता और सिखाता है, जबकि हम उसे नकार देते हैं, तब भी वह हमसे प्रेम करता है: यीशु ने यहूदा के साथ इतना अच्छा व्यवहार किया कि कोई और चेला विश्वास ही नहीं कर सकता था कि वह उसे पकड़वाएगा। उसी तरह यीशु भी हमसे प्रेम करता है, जबकि हम उसे धोखा देते और नकार देते हैं।
4. प्रभु यीशु मसीह का लहू हमारे पापों की क्षमा के लिए बहाया गया: चेले इस बात को एक समय तो नहीं समझ पाए कि प्रभु यीशु को अपना प्राण देना क्यों आवश्यक हैं। वे नहीं समझ पाए कि परमेश्वर को पापों की क्षमा के लिए कीमत चुकानी पड़ेगी, और वह कीमत, लहू का बहाया जाना होगा। वह यह समझते थे कि यीशु उनसे प्रेम करता है और उनके पाप क्षमा हो गए हैं। लेकिन उन्हें यह समझना और भी जरूरी था, कि कैसे यीशु को उनके पाप क्षमा करने के लिए अपनी जान की कीमत देनी होगी।

*बहुत से लोग जानते हैं कि पाप उनके जीवन में है। उन्हें यह भी मालूम है कि यीशु उनसे प्रेम करता है लेकिन बहुत ही कम लोग यह बात समझते हैं कि पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर लहू की कीमत चाहता है। केवल प्रभु यीशु मसीह ही ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर होने के कारण इस पृथ्वी पर निष्पाप था। क्योंकि उसका प्रेम हमारे लिए इतना अनोखा था कि उसने हमारे पापों की क्षमा के लिए अपना बलिदान देकर हमें छुड़ाया। यह उसके बलिदान के कारण ही है कि हमें अपने पापों की क्षमा, और परमेश्वर से शांति प्राप्त है।

अगले सप्ताह हम यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की शिक्षा लेंगे।

"यीशु का सलीब पर चढ़ाया जाना"–पाठ 6

मत्ती 26-27

यीशु ने उससे कहा, "तूने स्वयं ही कहा। फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिनी ओर बैठा हुआ और स्वर्ग से बादलों पर आता हुआ देखोगे।" (मत्ती 26 : 64)।

पुनर्विचार

1. यीशु कुंवारी से उत्पन्न हुआ जिसका नाम ..... था।
2. जैसा पवित्रशास्त्र में पहले से ही कहा गया था, यीशु का जन्म ..... नगर में हुआ।
3. पवित्रशास्त्र के अनुसार यीशु .....के देश से निकलकर मिस्र जाना पड़ा क्योंकि वह राजा हेरोदेस से भाग रहा था।
4. यीशु के पिता ..... ने स्वर्गदूतों द्वारा यह सलाह पाई कि वापस इस्राएल को लौट जा क्योंकि राजा हेरोदेस मर चुका है। क्योंकि यूसुफ हेरोदेस के बेटे से डरता था, इसलिए वह ..... के प्रांत नासरत नगर को चला गया।
5. ..... के द्वारा बपतिस्मा लेने के बाद यीशु ने अपनी सेवा का आरंभ किया।
6. जैसे यीशु पानी से बाहर निकला ..... कबूतर की नाई उसपर ठहरा और आकाश से ..... की यह आवाज़ आई कि 'यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं।'
7. यीशु ने बहुत से लोगों को चंगा किया और उनके ..... से उन्हें क्षमा किया।
8. बहुत से आश्चर्यकर्म देखने के बाद भी गलील क्षेत्र के लोगों ने यीशु के संदेश को .... तब भी उन्होंने अपने पापों से पश्चात्ताप नहीं किया।
9. शब्द "पश्चात्ताप" का क्या अर्थ है?
10. जब यीशु यरूशलेम को गया तो एक बड़ा जुलूस उसके साथ हो लिया इस जुलूस में यीशु ..... पर बैठा था।
11. फसह के पर्व की रात यीशु ने अपने चेलों से कहा कि उनमें से एक उसे ....., लेकिन काई नहीं जानता था कि वह कौन है?
12. यीशु ने उन्हें पीने वाले दाखरस के बारे में बताया। उसने कहा कि यह उसके लहू का प्रतीक है जो उनके पापों की ..... के लिए बहाया जाएगा।
13. चेलों ने इन शब्दों को सुना, फिर भी वे नहीं समझे कि वह उनके पापों के बदले .... देगा।
14. भोजन के बाद वे जैतून पर्वत पर, और वहां से गतसमनी के बाग में गए जहां यीशु रात भर प्रार्थना करता रहा, जबकि उसे चेले ..... रहे थे।
15. यीशु ने कहा, "यदि हो सके तो यह प्याला मुझसे टल जाए, परंतु मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही ..... पूरी हो।"

जबकि यीशु ऊपर जा ही रहा था, तो उसे धोखे से पकड़वाने वाला यहूदा याजकों और धार्मिक अगुवों के साथ उसे पकड़ने आ पहुंचा। उनके हाथों में तलवारें और भाले थे। यहूदा ने यीशु को चूमा और कहा, "हे रब्बी नमस्कार" यीशु ने कहा, "मित्र, तू यहां क्यों आया है?"

तभी यीशु के चेलों में से एक ने जल्दी से तलवार निकालकर महायाजक के दास का कान काट दिया। उसी घड़ी यीशु ने उसका कान ठीक कर दिया। यीशु ने अपने चेलों से कहा कि 'यदि वह लड़ाई करना चाहे तो बारह सेनाओं से अधिक स्वर्गदूतों को बुला सकता है, लेकिन यह तो केवल पवित्रशास्त्र के अनुसार पिता की इच्छा पूरी हो रही हैं।

तभी यीशु उस भीड़ की ओर मुड़ा जो उसे पकड़ने आई थी और कहा, "क्या तुम भाले और तलवार इसलिए लाए हो कि तुम किसी डाकू को पकड़ो? मंदिर में रोज मैं तुम्हारे साथ बैठकर शिक्षा देता था, और वहां तुमने मुझे नहीं पकड़ा। लेकिन यह सब इसलिए हुआ कि भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया वचन पूरा हो।" उसी घड़ी उसके चेले उसे छोड़कर भाग गए।

तब वे उसे पकड़कर महायाजक काइफा के घर ले गए। वहां बहुत से याजकों और धार्मिक नेताओं ने उससे पूछताछ की। वहां उन्होंने बहुत से झूठे गवाहों को इकट्ठा किया था कि वे उसपर दोष लगाएँ ताकि उसे क्रूस पर चढ़ाया जा सके। लेकिन तब भी वे उसपर मृत्यु योग्य दोष लगाने के लिए प्रमाण न जुटा जाए। तब महायाजक ने स्वयं उससे पूछताछ की। उसने यीशु से कहा, "मैं तुझे जीवित परमेश्वर की शपथ खिलाता हूं, हमें बता कि क्या तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"

यीशु ने उससे कहा, "ऐसा तू स्वयं कहता है। लेकिन मैं तुझसे कहता हूं कि इसके बाद तुम मनुष्य के पुत्र को सामर्थी के दाहिने बैठे, और बादलों पर आता हुआ देखोगे।" ऐसा सुनकर महायाजक ने कपड़े फाड़ लिए और कहा, "यह तो घोर निंदा है!" जो लोग वहां इकट्ठा थे, उन्होंने यीशु के मुंह पर थूका, बहुतों ने उसे घूंसों से मारा और उससे पूछा, "हमें बता कि तुझे किसने मारा है?"

अगली सुबह वे उसे रोमी राज्यपाल पिलातुस के पास ले गए, और उससे कहा कि, "यह अपने आप को यहूदियों का राजा कहता है।" पितातुस ने उससे पूछा 'क्या तू यहूदियों का राजा है?' यीशु ने कहा "ठीक, तू स्वयं ही कहता है।" लेकिन बाद भी पिलातुस यीशु में उसे क्रूस पर चढ़ाने योग्य दोष न पा सका। पिलातुस की पत्नी ने एक स्वप्न देखा और अपने पति से कहा कि तू, यीशु के साथ कुछ न करना। पिलातुस यह जानता था कि यहूदी अगुवों ने ईर्ष्यावश ऐसा किया है। लेकिन वह यह नहीं जानता था कि क्या करे। क्योंकि भीड़ क्रुद्ध थी।

एक प्रथा के अनुसार हर फसह पर लोगों की इच्छा अनुसार एक कैदी को छोड़ा जाता था, और इस वर्ष बरअब्बा नामक एक विशेष खतरनाक अपराधी कैद में था। अत: उसने बरअब्बा और यीशु को लिया और उन्हें उनमें से एक को चुनने को कहा कि, "तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूं–बरअब्बा अथवा यीशु को जो मसीह कहलाता है?" परन्तु लोगों ने, जिनको फरीसियों ने उकसाया था, कहा, "बरअब्बा को!" तब उसने लोगों से पूछा, कि यीशु जो मसीह कहलाता है, के साथ मैं क्या करूँ? लोगों ने उससे कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ा।"

तब पिलातुस ने पानी मंगवाया और अपने हाथ धो लिए और कहा, "मैं यीशु के लहू से निर्दोष हूं। जो तुम चाहो उसके साथ करो।" सो उसने बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवाये।

तब सिपाही उसे ले गए और उसको यातना दी, और उसका मजाक उड़ाया। वे चारों ओर इकट्ठा हो गए। उसे चोगा पहनाया, कांटों का ताज उसके सिर पर रखा, और उसके हाथ में एक छड़ी दी और झुककर उसे प्रणाम किया और कहा, "यहूदियों के राजा को नमस्कार!" उसपर उन्होंने थूका, और जो छड़ी उसके हाथ में थी, उसी से उसे मारा। जब वे उसका मज़ाक उड़ा चुके तब उन्होंने उसका चोगा उतारा और उसे गुलगता (खोपड़ी के स्थान पर) ले गए जहां उसे

क्रूस पर चढ़ाया जाना था। वहां उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और एक लेख लिखकर उसपर लगा दिया कि यह यीशु यहूदियों का राजा है। उसे दो डाकुओं के बीच में सलीब दी गई। जब यीशु सलीब के ऊपर था, तो नवें घंटे के लगभग यीशु ने जोर से पुकारा, **"एली, एली लमा-शबक्तनी"** जिसका अर्थ है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" इसके बाद फिर वह चिल्लाया, और कहा "हे पिता मैं अपना प्राण तेरे हाथों में सौंपता हूं।"

जब उसने अपना प्राण त्याग दिया। तब बहुत सी विचित्र घटनाएं घटित हुई, जैसे मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में हो गया। चट्टानें तड़क गईं, भूकंप आया, और बहुत-सी कब्रें खुल गईं, बहुत से पवित्र लोगों के शव जीवित हो उठे, जिन्हें बहुत-से लोगों ने देखा।

मौखिक प्रश्न

1. यीशु को कैसे धोखा दिया गया?
2. यीशु के एक चेले ने यीशु को बचाने के लिए कुछ किया था। उसने क्या किया था और यीशु की क्या प्रतिक्रिया रही?
3. पकड़वाए जाने के समय उसके चेलों ने क्या किया?
4. कौन से बाग में उन्होंने यीशु को पकड़ा?
5. जबकि बहुत से झूठे गवाह वहां थे, लेकिन यीशु पर दोष लगाने के लिए उन्होंने क्या किया?
6. अगली सुबह वे यीशु को कहां ले गए?
7. जब पिलातुस यीशु में कोई दोष न पा सका, तो उसने यीशु को लोगों पर छोड़ दिया। तो पिलातुस ने लोगों के सामने चुनने के लिए क्या रखा, और उन्होंने क्या चुना?
8. सिपाहियों ने यीशु के साथ कैसा बर्ताव किया?
9. तीन घंटे के अंधकार के बाद यीशु ने क्या पुकारा, और उसका क्या अर्थ था?
10. वे कौन सी घटनाएं उस समय घटीं जब यीशु ने अपना प्राण त्यागा?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 6

मत्ती 26-27

1. यीशु कौन है?: "मनुष्य का पुत्र जो सर्वशक्तिमान के दाहिने बैठा है और स्वर्ग के बादलों पर आने वाला है।" यही जवाब यीशु ने महायाजक को दिया था और, इसी कारण उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए ले जाया गया। यह वह जवाब था जिसे लोगों ने स्वीकार नहीं किया। परन्तु आज भी हर किसी को उसी प्रश्न का सामना करना होगा, यह जानने के लिए कि यीशु कौन है? क्योंकि यदि यीशु वास्तव में सर्वशक्तिमान के दाहिने बैठा है और बादलों पर आने वाला है तो हममें से प्रत्येक को आज निर्णय करना होगा कि हमारा प्रत्युत्तर क्या होगा?
2. बरअब्बा के स्थान पर यीशु को सलीब पर चढ़ाया गया और निर्दयी डाकू, बरअब्बा को मुक्त कर दिया गया।

*हो सकता है कि मैं बरअब्बा के समान घृणित डाकू नहीं हूं, लेकिन परमेश्वर के सामने पापी हूं। और इसी कारण मृत्यु मेरी सजा है। रोमियों 6: 23 में लिखा है "पाप की मजदूरी मृत्यु है।" जिसका यह अर्थ है कि हम सबको मरना है, अपने उन पापों के कारण जो हमने अपने जीवन में किए हैं। जरूरी नहीं है कि हमने बरअब्बा के समान बहुत से पाप किए हों, और न हम उसके चेलों के समान अच्छे व्यक्ति हों, तब भी हमें पापों की क्षमा की आवश्यकता है।

3. यीशु सताया गया, दंडित हुआ और मारा गया केवल हमारे पापों की कीमत को चुकाने के लिए: इसी कारण से यीशु पृथ्वी पर आया, क्योंकि वह चाहता है कि हम परमेश्वर के सामने पापों की क्षमा प्राप्त किए हुए व्यक्तियों की नाई खड़े हों। कुछ लोग कहते हैं कि यीशु एक भविष्यद्वक्ता है, या शहीद है। लेकिन यह सत्य नहीं है। लेकिन यीशु ने स्वयं इस बात का दावा किया कि वह परमेश्वर है और लोगों के पापों के लिए अपना प्राण देने पृथ्वी पर आया।
4. यीशु ने स्वंय अपना प्राण सौंपा: यदि यीशु चाहता तो किसी भी क्षण क्रूस से नीचे उतर सकता था। अपने एक ही शब्द के द्वारा उन सबको जो उसका मजाक उड़ा रहे थे, मार सकता था। लेकिन स्वयं उसने दीन बनना चुना, और हमारे लिए सलीब पर चढ़ा। अपना आत्मा उसने सौंप दिया कि हमारे पापों का कर्ज़ चुकाया जाए। यूहन्ना 3: 16 में लिखा है: "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उसपर विश्वास करे, नाश न हो, परंतु अनंत जीवन पाए।"

*अगले पाठ में हम यीशु के पुनरुत्थान के बारे में पढ़ेंगे, जिससे इस सत्य को जानेंगे कि आज यीशु मरा हुआ नहीं है, लेकिन जीवित है। वह आपके जीवन में आना चाहता है। वह आपके पापों को क्षमा करके, आप को पवित्र बनाना चाहता है और आपके जीवन को पूर्णत: बदलना चाहता है।

यीशु का पुनरुत्थान–पाठ 7

मत्ती 27–28

"डरो मत, क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ रही हो। वह यहां नहीं है, क्योंकि वह अपने कहने के अनुसार जी उठा है।" मत्ती 28: 5–6

पुनर्विचार

1. यीशु एक कुंवारी कन्या जिसका नाम ..... था, उससे पैदा हुआ।
2. यीशु ने अपनी सेवकाई का आरंभ यूहन्ना द्वारा ..... पाए जाने के बाद किया।
3. बपतिस्मे के समय ..... कबूतर की नाई उसके ऊपर आ ठहरा। और स्वर्ग से परमेश्वर की आवाज़ आई, "यह मेरा प्रिय ..... है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं।" इससे हमें त्रिएकता के तीन व्यक्तियों ..... का पता चलता है।
4. यीशु ने बहुत से लोगों को बीमारियों से चंगा किया और उनके पापों को ..... किया।
5. लेकिन बहुतों ने इन आश्चर्यकर्मों को देखने के बाद भी यीशु के वचनों को ग्रहण नहीं किया और अपने पापों से ..... नहीं किया।
6. शब्द 'पश्चात्ताप' का क्या अर्थ है?
7. यीशु ने कहा, दाखरस उसके लहू का प्रतीक है जो बहुतों के लिए ..... जाएगा, उनके पाप की ..... के लिए।
8. फरीसियों ने यीशु को गतसमनी बाग में, जहां वह प्रार्थना कर रहा था, उसे पकड़ा और ..... महायाजक के घर ले गए।
9. महायाजक ने उससे पूछा कि क्या वह ..... और यीशु ने कहा हां, वह है। जब वे लोग यीशु के पास आए और उसके मुंह पर ..... और उसका ..... उड़ाया, और जो ..... उसके हाथ में थी उससे उसे मारा।
10. अगली सुबह फरीसी उसे रोमी राज्यपाल, जिसका नाम ..... था, उसके पास ले गए।
11. पिलातुस ने यीशु में कोई दोष नहीं पाया लेकिन लोगों के डर के कारण उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए दे दिया कि कहीं लोगों में ..... न उत्पन्न हो जाए।
12. रोमी सिपाहियों ने उसे सताया और ..... का ताज उसके सिर पर रखा और उसके सिर पर ..... से मारा, जो उसके हाथ में थी।
13. यीशु की सलीब पर यह लिखकर टांग दिया गया कि 'यह यीशु है जो यहूदियों का ....है।'
14. छः से नौ घंटे तक पूरे देश ..... छाया रहा।

एक धनी व्यक्ति जिसका नाम अरमतियाह का यूसुफ था, वह भी यीशु का चेला था। उसने पिलातुस से आज्ञा ली कि क्या वह यीशु के शव को लेकर अपनी कब्र में दफना सकता है। पिलातुस ने इसे स्वीकार किया और तब यूसुफ ने यीशु को उस कब्र में दफना दिया, और एक बड़ा पत्थर मुंह पर रख दिया। अगली सुबह सब फरीसी इकट्ठे हुए और पिलातुस के पास गए, क्योंकि उन्हें यीशु की बातें याद थीं, कि उसने कहा था कि, "वह तीसरे दिन जी उठेगा।" उन्होंने पिलातुस से कहा, "अच्छा होगा कि कब्र को तीन दिन तक के लिए सुरक्षा में रखा जाए।' अतः

पिलातुस ने यह आज्ञा दे दी, और उन्होंने कब्र के ऊपर रोमी राज्य की मुहर लगा दी।

हफ्ते के पहले दिन मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम, जहां यीशु को रखा था, वहां गईं। उन्होंने देखा कि भूकंप के कारण कब्र का पत्थर हटा हुआ है और प्रभु का स्वर्गदूत पत्थर पर बैठा है; और जो सिपाही उसकी सुरक्षा कर रहे थे, वे भयभीत थे।

लेकिन स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, "जिस यीशु को तुम ढूंढ रही हो, वह यहां नहीं है वह जी उठा है। इससे पहले कि तुम गलील पहुंचो, वह वहां होगा और तुम उसे देखोगी।" वे स्त्रियां वहां से आनंद और डर के कारण चेलों को बताने के लिए दौड़ पड़ी। लेकिन जब वे जा रही थीं, तो यीशु उनसे मिला और कहा कि "आर्नंदित हो।" वे रुक गईं, और झुककर उसे दंडवत किया और उसने उनसे कहा कि "चेलों से कहो कि वे मुझे गलील में मिलें।"

तब सिपाहियों ने महायाजक को, जो कुछ हुआ था, वह सब बता दिया। तब महायाजकों ने निश्चय किया कि वे सिपाहियों को बहुत-सा धन दें, और वे नगर में चारों ओर फैला दें कि जब वे सो रहे थे तो चेले उसका शव चुराकर ले गए। और उन्होंने सिपाहियों से कहा कि 'यदि पिलातुस तुमसे पूछता है कि तुम सो रहे थे, तो हम तुम्हें बचा लेंगे।' सिपाहियों ने घूस लेकर शहर में चारों ओर यह अफवाह फैला दी।

बाकी ग्यारह चेले उस स्थान पर पहुंचे, हां यीशु ने उनसे मिलने को कहा था। जब उन्होंने उसे देखा, तो उसे दंडवत किया। परंतु बहुतों ने उसपर संदेह किया।

तब यीशु ने उनसे आखिरी बार कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ, तथा उन्हें पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और जो-जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी हैं, उनका पालन करना सिखाओ, और देखो, मैं युग के अंत तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।" आमीन!

मौखिक प्रश्न

1. अरमत्तियाह के यूसुफ ने पिलातुस से क्या आज्ञा लेनी चाही?
2. फरीसी किस बात से डरते थे कि तीन दिन में यीशु के शव के साथ क्या होगा और क्यों?
3. सबसे पहले यीशु को देखने के लिए कौन गया और उन स्त्रियों ने कब्र पर क्या पाया?
4. जब वे चेलों को बताने के लिए वापस आ रही थीं, तो उनकी भेंट किससे हुई?
5. यीशु ने चेलों से मिलने के लिए कौन-सा स्थान चुना?
6. पर्वत पर यीशु ने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य सौंपा। यीशु के शब्दों में उन्हें लिखें। "इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को ..... बनाओ। उन्हें पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम से ..... दो। और जो-जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना ..... और देखो, मैं युग के अंत तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।"

आत्मिक सच्चाइयां – पाठ 7

मत्ती 27-28

1. यीशु आज भी जीवित है। यीशु मानव नहीं है कि उसे जेल में डाल दिया जाए और मार दिया जाए, लेकिन वह अनन्त परमेश्वर है। वह बिना आरंभ और अंत के है। परमेश्वर की योजना इस संसार में पूरी करने के लिए वह दास के रूप में प्रकट हुआ जिसे सताया गया, यह उसी की इच्छा थी कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए और ऐसे सताव से वह गुजरे। उसकी योजना उलझाव पैदा नहीं करती, और न ही कोई उसकी योजना को भंग कर सकता है। वह हमेशा परमेश्वर ही रहेगा–केवल एकमात्र सत्य परमेश्वर।

2. फरीसियों ने यीशु के कथनों पर यहां तक विश्वास किया था कि उसके मरने के बाद उन्होंने सिपाहियों को कब्र पर तैनात कर दिया। क्योंकि उसने तीन दिन बाद जी उठने की प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने सिपाहियों की बातों पर विश्वास किया, जब उन्होंने कहा कि यीशु जी उठा है। यहां तक कि उन्होंने सिपाहियों को झूठ बोलने के लिए धन भी दिया और यही वे लोग थे, जब यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा दे रहा था, तब भी वे उपस्थित थे। और इन्होंने इस आवाज़ को सुना था, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।" इन्होंने यीशु के बहुत से आश्चर्यकर्मों को देखा था। वे उससे बहुत क्रोधित थे, जब सब्त के दिन उसने सूखे हाथ वाले व्यक्ति को चंगा किया था। उसने बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला और लोगों के पापों को क्षमा किया। यह भी उन्होंने देखा और हो सकता है फरीसियों से अधिक कोई भी यीशु के जीवन और उसके संदेश के बारे में न जानता हो। लेकिन यह वही लोग थे जब प्रभु का प्रेम उन पर प्रकट हुआ, तब उन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया। वे अपने पापों से नहीं पछताए और न ही अपना जीवन यीशु के नियंत्रण में दिया। यीशु से संबध रखना, विश्वास करना उसके बारे में जानने से बहुत बढ़कर है। यीशु की इच्छा हमारे जीवन में यह है कि हम पापों से पश्चात्ताप करें और उसपर विश्वास करें और अपना जीवन उसे दे दें। वह हमारे जीवन का प्रभु होना चाहता है। प्रत्येक दिन वह हमारे जीवन को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है।

3. यीशु कौन है?
   - यीशु एक कुंवारी से उत्पन्न हुआ था।
   - यीशु ने दावा किया कि वह परमेश्वर था।
   - यीशु ने बहुत से आश्चर्यकर्म किए और जिन्होंने पश्चात्ताप किया उसने उसके पापों को क्षमा किया।
   - यीशु ने क्रूस पर अपना प्राण देकर न्यायी परमेश्वर के सामने हमारे जीवन के पापों की कीमत को चुकायी।
   - यीशु मृतकों में से जी उठा और आज भी जीवित है।
   - यीशु मुझसे भी चाहता है कि मैं अपने पापों से क्षमा मांगू और अपना जीवन उसे दे दूं।

   बाइबल हमें सिखाती है कि यीशु ने अपना प्राण इसलिए नहीं दिया कि वह हमारे लिए मात्र

एक नमूना बन जाए, परंतु इसलिए कि वह हमारा स्थानापन्न बन जाए और हम परमेश्वर का सामना करने से बच जाएं।

बाइबल कहती है कि "जो यीशु का नाम लेगा वह बच जायेगा (रोमि. 10:13)।

- ❖ इसका अर्थ है कि प्रभु हमारे पुराने जीवन को नहीं देखता। मैं यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित कर सकता हूं कि वह मेरे पापों को क्षमा करे और मैं उसमें अपना नया जीवन बिताऊं।
- ❖ इसका अर्थ यह हुआ कि जिस क्षण प्रभु यीशु हमारे हृदय में प्रवेश करता है तब हमारे भूत वर्तमान और भविष्य के पाप परमेश्वर के सामने क्षमा हो जाते हैं। यह इसलिए नहीं कि हमने कुछ अच्छा किया है, और न ही इसलिए कि मैं एक आदर्श व्यक्ति हूं; और इसलिए भी नहीं कि मेरे माता-पिता किसी अन्य जाति के हैं। लेकिन यह केवल इसलिए है कि मैंने प्रभु यीशु के बलिदान को जो उसने क्रूस पर दिया, ग्रहण किया है।
- ❖ इसका अर्थ यह हुआ मैं परमेश्वर की दृष्टि में निर्दोष और पवित्र हो गया। बाइबल हमें सिखाती है कि पाप की मजदूरी मृत्यु है, लेकिन प्रभु यीशु की मृत्यु मुझे नया प्राणी बनाने के लिए काफी है। यदि मैं प्रभु के पीछे चलने का निर्णय लेता हूं, यदि आप परमेश्वर की क्षमा अपने जीवन में चाहते हैं, और उसका अनुयायी होना चाहते हैं तो उससे कहे, "इसी क्षण मेरे हृदय में आ।" ऐसा करने के लिए कोई विशेष स्थान या शब्दों की आवश्यकता नहीं है, लेकिन महत्वपूर्ण बात केवल यह है कि आप परमेश्वर के पास जाएं और बात इसकी घोषणा करें कि यीशु परमेश्वर है और उसे आप अपने जीवन का नियंत्रण सौंपते हैं।

यदि चाहें तो आप इस प्रकार प्रार्थना कर सकते हैं।

"पिता, आप जानते हैं कि मैं पापी हूं। मैं विश्वास करता हूं कि यीशु ने अपना प्राण सलीब पर मेरे लिए दिया और मुझे पापों से बचाने के लिए जी उठा। मैं अपने पापों से पश्चात्ताप करता हूं। मेरे जीवन में आ, मेरे पापों को क्षमा कर और मैं अपना जीवन तुझे सौंपता हूं। धन्यवाद तेरे उस प्रेम के लिए जो तूने मुझसे किया। यीशु के नाम में। आमीन!"

4. और देखो, "जगत के अंत तक मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं।"

यूहन्ना 14: 13 में बाइबल बताती है "मेरे पिता के घर में रहने के बहुत-से स्थान हैं। यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता। क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं और यदि मैं जाकर तुम्हार लिए जगह तैयर करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं, वहां तुम भी रहो।"

यीशु ने प्रत्येक से प्रतिज्ञा की कि, जो कोई उसे अपना जीवन देगा, वह उसके साथ अनन्तकाल तक स्वर्ग में जीवन बिताएगा स्वर्ग, पिता का घर है। एक बार जब यीशु को हम अपने जीवन में ग्रहण कर लेते हैं, तब हम उसके अनन्तजीवन में भी सहभागी होंगे। इसका अर्थ यह है कि यीशु हमारे साथ पृथ्वी पर होगा, लेकिन जब हम मर भी जाते हैं, तो स्वर्ग में उसके साथ अनंत जीवन बिताएंगे।

जो प्रेम यीशु हमसे करता है, वह कभी खत्म नहीं होता।

❋❋❋